[72 & A-27] No. of printed pages: 02

SARDAR PATEL UNIVERSITY
M. A. (IIIrd Semester) (Hindi))Examination
2016
Friday, 21st October
2.00 pm - 5.00 pm
PA03CHIN03 - छायावादी काव्य

कुल गुण : ७०

प्र.१ पठित छायावादी कविताओं को केन्द्र में रखते हुए छायावादी काव्य के वर्ण्य विषय एवं शिल्पपक्ष पर प्रकाश डालिए । (१७)

अथवा

प्र.१ पुत्रीप्रेम की कविता के रूप में 'सरोजस्मृति' की समीक्षा कीजिए ।

प्र.२ 'भाव, विचार एवं भाषा की दृष्टि से 'परिवर्तन' सुमित्रानंदन पंत की सर्वोत्तम रचना है'- कथन को सोदाहरण समझाईए । (१७)

अथवा

प्र.२ 'महादेवी वर्मा के काव्य में स्त्री संवेदना' प्रस्तुत विषय की सोदाहरण चर्चा कीजिए ।

प्र.३ टिप्पणी लिखें **(किन्हीं दो)** (१८)

(१) 'कामायनी' के पात्रों की ऐतिहासिकता एवं प्रतीकात्मकता
(२) जयशंकर प्रसाद एवं निराला का काव्यसंसार
(३) महादेवी वर्मा के काव्य का अभिव्यंजना पक्ष
(४) सुमित्रानंदन पंत की छायावादी काव्य कृतियों का परिचय

प्र.४ संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए (१८)

(क) रात के उर में दिवस की चाह का शर हूँ ।
शून्य मेरा जन्म था अवसान है मुझको सवेरा
प्राण आकुल के लिए संगी मिला केवल अंधेरा
मिलन का मत नाम ले मैं विरह में चिर हूँ ।

अथवा

काम मुझसे ही सधा है
शेर भी मुझसे गधा है ।
चीन में मेरी नकल, छाता बना
छत्र भारत का वही, कैसा तना
सब जगह तू देख ले
आज का फिर रूप पैराशूट ले ।
विष्णु का मैं ही सुदर्शन चक्र हूँ ।
काम दुनियाँ में पड़ा ज्यों, वक्र हूँ ।

उलट दे, मैं ही जसोदा की मथानी
और भी लम्बी कहानी -
सामने ला, कर मुझे बेंडा
देख कैंड़ा
तीर से खींचा धनुष मैं राम का ।

(ख) अरी व्याधि की सूत्र-धारिणी ! अरी आधि, मधुमय अभिशाप !
हृदय-गगन में धूमकेतु-सी, पुण्य सृष्टि में सुन्दर पाप ।
मनन करावेगी तू कितना ? उस निश्चिंत जाति का जीव;
अमर करेगा क्या ? तू कितनी गहरी डाल रही है नींव ।

अथवा

पतवार घुमा, अब प्रतनु भार
नौका घूमी विपरीत धार !
डाँडों के चल करतल पसार, भर भर मुक्ताफल फेन स्फार,
बिखराती जल में तार हार !
चाँदी के साँपों-सी रलमल नाचतीं रश्मियाँ जल में चल,
रेखाओं-सी खिंच तरल सरल !
लहरों की लतिकाओं में खिल, सौ-सौ शशि सौ-सौ उडु झिलमिल
फैले फूले जल में फेनिल !

☺☺☺☺☺